Pratidhwani the Echo
A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science
ISSN: 2278-5264 (Online) 2321-9319 (Print)
***Impact Factor: 6.28** (Index Copernicus International)*
UGC Approved, Journal No: 48666
Volume-VII, Issue-III, January 2019, Page No. 327-333
Published by Dept. of Bengali, Karimganj College, Karimganj, Assam, India
Website: http://www.thecho.in

गाँधीवादी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव

डॉ कमल हरनाल

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, माउंट कार्मल कॉलेज, बैंगलोर

Abstract

Truth, non-violence, freedom, equality, employment, labour, trusteeship, decentralization, swadesh, swaraj, service and cooperation are perceived as cardinal principles of Gandhi. The welfare of human beings, not of systems or institutions, is the ultimate consideration. Gandhian philosophy is a double – edged weapon and its objective is to transform the individual and society. On March 29, 1918, he for the first time called for Hindi to be given status of the country's national language. He believed that if Hindi and other regional languages are not provided their adequate importance, talks of a 'swarajya' are meaningless. We cannot deny the fact that his ideologies has a great impact on Hindi literature.

महात्मा गाँधी का अवतरण विश्व के इतिहास क्षितिज पर विराटत्व का अवतार था। जब कोई विराट व्यक्तित्व सम्पन्न महापुरूष/युगपुरूष का आविर्भाव धरती पर होता है तब प्रत्येक भाषा का साहित्य भी उससे अवश्य ही प्रभावित होता है। राष्ट्रभाषा हिन्दी का साहित्य भला कैसे अछूता रहता। उनका जीवन इतना सादा होते हुए भी प्रभावशाली व प्रेरणापरक था। इसी कारण वश राष्ट्रीय जागरण के इतिहास में गांधीयुग का आविर्भाव हो गया। सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में उनकी सात्विक विचारधारा का स्थायी प्रभाव स्वीकृत है।

महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने जनमानस को पूरी तरह से झकझोर डाला। साहित्य चूँकि भावना का विषय है अतः वह उनके प्रभाव से कैसे अभिभूत न होता।

प्रत्येक भारतीय साहित्यकार ने उनसे प्रभावित होकर अपनी रचनाओं में उनकी छवि को अंकित किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर भी गाँधी-विचारधारा का अत्यधिक प्रभाव पड़ा कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष।

हिन्दी साहित्य पर गाँधी का प्रभाव पूरे वेग के साथ पड़ा। साहित्यकार की मूलतः संवेदनशील होती है जिसका असर साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक होता है। हिन्दी के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को अलग जगाई तथा हिन्दी को सम्पूर्ण भारतवर्ष की वाणी बनाया। साहित्य के विविध रूपों में इसकी अभिव्यक्ति हुई।

युद्ध के कट्टर विरोधी गाँधी। ने किसी भी हालत में युद्ध का समर्थन नहीं किया। मगर आत्मरक्षा के लिए, विदेशी आक्रमण को रोकने के लिए होने वाले युद्ध के प्रति सहानुभूति दिखाते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद गाँधी जी ने अपने युद्ध सम्बन्धी विचार प्रकट किए थे। उनके अनुसार वास्तव में युद्ध गलत है। स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान के कश्मीर पर आक्रमण करने पर गाँधीजी का यह विचार था कि आक्रमणकारी पाकिस्तान से युद्ध करें और आक्रमण रोके।[1]

लगभग यही भाव जयशंकर प्रसाद के काव्य 'लहर' में मुखरित हुआ है। 'लहर' में प्रसाद हिंसा पर चिंता प्रकट करते हुए कहते हैं कि "मानव काम का मद पीकर और महादम्भ से दानत्व को जीकर सृष्टि में भीषण उत्पात करने लगा है, उनकी अभीप्सा है कि मनुष्य हिंसा का त्याग कर संसार को सुख का साम्राज्य सौंपे..."

"यह महादम्भ का दानव,
पीकर अनंग का आसव
कर चुका महाभीषण रव
सुख दे प्राणी को मानव।"[2]

इसी त्याग और बलिदान की भावना का समर्थन गाँधीवादी विचारधारा में मिलता है। प्रेम के द्वारा उन्होंने विश्व-कल्याण की कामना की जो मानवता का आधार है। अंग्रेजों के आतंक और हिंसक आंदोलन का प्रतिकार गांधी ने सत्य और अहिंसा से किया।

गाँधी ने नारी से जुड़ी सभी प्रकार की समस्याओं को ध्यान में रखकर उनके खिलाफ़ आवाज़ बुलन्द की और पहली बार नारी को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का आह्वान किया। गाँधी की इस विचारधारा ने अनेक कवियों को प्रभावित किया जिसके फलस्वरूप नारी-जागृति का शंखनाद हुआ।

"तुम क्या नर थे, मैं क्या नारी,
अफिना पति अधिकारी,
तुमने मेरी फूल-देह पर तप्त लालसा रोज सजाई।
मैं मानव आज जन-धात्री, मानव-सहचरी,
जीवन-धात्री,
मीत न हो ओ, प्रिय अब नारी,
लेती जागृति की अंगड़ाई।"[3]

स्वर्णधूलि, पंत: इस प्रकार स्त्री-उन्नति में गाँधी का समर्थन निर्विवाद है। नारी के इस उज्जवल रूप को सत्यागृह आंदोलन में देखा जा सकता है। लाखों स्त्रियों ने परदा त्यागकर मातृभूमि के लिए स्वयं को अर्पित किया। जिस अस्पृश्यता और अछूतोद्धार की बात गाँधी ने की उसी को एक झलक 'कामायनी' में भी मिलती है जहाँ प्रसाद ने अस्पृश्यता-निवारण को मानवता के विकास के लिए अनिवार्य माना है।

'भेदभाव सब दूर हटाकर गले लगाओ।
इन्हें शूद्र मत कहो, पास इनको बिठाओ
सब भेदभाव भूलकर सुख-दुख का दृश्य बनाता
मानव कह रे। यह मैं हूँ यह विश्व नीड़ बन जाता।[4]

हिन्दी काव्य के अतिरिक्त यदि हिन्दी नाटकों पर दृष्टि डालें तो वहाँ भी हमें गाँधी विचार के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। भारतेन्दु युग से नाटक लेखन कार्य आरम्भ हुआ। जयशंकर प्रसाद के आविर्भाव से नाट्यसाहित्य में नया प्रकाश प्रकट हुआ। प्रसाद ने गाँधी दर्शन को ग्रहण कर गाँधीयुग की सम्पूर्ण राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना को वाणी प्रदान की। इस समय गाँधीजी की विचारधारा से देश के कोने-कोने में जागृति का प्रकाश फैलने लगा था। अतः इस युग के पौराणिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय और समस्या नाटकों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है

कि विषय प्रतिपादन की दृष्टि से अधिकांश कृतियों पर गाँधी विचारधारा का प्रभाव है। राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप राजभक्ति, देशभक्ति, भारत के अतीत का गौरव गान आदि विषयों पर नाट्य रचनाएँ होने लगीं।

जयशंकर प्रसाद के नाटक 'विशाख' का रचनाकाल 1921 है। इस समय तक महात्मा गाँधी का प्रवेश देश की राजनीति में हो चुका था। तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए यदि इस नाटक का अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि प्रसाद ने अपने युग का चित्रण इस नाटक में किया है। 'विशाख' का कथानक राजनीतिक है राजा नरदेव अत्याचारी और कामुक है। न्याय के नाम पर अत्याचार करना और शान्ति के उपासक बौद्ध-भिक्षुओं को जलवा देना उसके लिए मामूली बात है। नाटक का महत्व कथानक में निहित सामयिकता में है। महात्मा गाँधी को इस नाटक के पात्र 'प्रेमानन्द' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। संवादों को पढ़ने से जान पड़ता है कि प्रेमानन्द के शब्दों में मानों महात्मा गाँधी की वाणी ही प्रकट हो रही है। यथा –

> *"किन्तु क्या अन्याय का प्रतिफल अन्याय है?*
>
> *क्या राजा मनुष्य नहीं है?--- देश की शांति भंग करना और निरपराधों को दुख देना इसमें तुम्हें क्या मिलेगा? देखो सावधान हो इस उत्तेजना राक्षसी के पीछे न पड़ो, एक अपराध के लिए लाखों को दण्ड न दो।"*[5]

जिस आत्मशुद्धि और प्रायश्चित की बात गाँधी ने की उसे भी नाटक में दृष्टिगत किया जा सकता है। यथा –

> *"देवी क्षमा को। अधम के अपराध क्षमा हो।"*[6]

गाँधी की आध्यात्मिक विचारधारा का प्रभाव प्रसाद के 'कामना' नाटक पर दृष्टव्य है। इस नाटक की रचना तब हुई जब भारत में महात्मा के उपदेशों के बाद नवजागरण का उदय हो चुका था। त्याग, तपस्या, संयम और परिश्रम का महत्व प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता था। सबके हृदय में स्वतंत्र, सुखी व विदेशी बन्धन से आज़ाद होने की प्रवृत्ति ही प्रमुख थी।

गाँधी आधुनिक सभ्यता के जिस कृत्रिम जीवन से मानव-जाति को सावधान कर रहे थे। वह प्रसाद को भी अप्रिय प्रतीत हो रहा था इसलिए वे नाटक को मानवनीति के उस जीवन से दिखाना प्रारम्भ करते हैं जिसमें लोगों को प्रकृति से प्रेम था, यह जाति चर्खा चलाकर, कृषि द्वारा उत्पन्न अन्न से परिवार का पालन और अतिथि का स्तकार करती थी, समस्त जाति उपासना करती थी। इस मन्दिर की व्यवस्थापिका थी 'कामना'।

आधुनिक हिन्दी-नाटकों में गाँधी जी के सत्य-सिद्धान्त की अभिव्यक्ति विविध रूपों में परिलक्षित होती है, जिसमें सभी लेखक सत्यनिष्ठा की महत्ता पर बल देते हैं। प्रसाद के एक अन्य नाटक 'जनमेजय का नागयज्ञ' में श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद में श्रीकृष्ण सर्वव्यापी चैतन्य शक्ति का ज्ञान करवाते हुए कहते हैं –

> *"उस चेतन के अस्तित्व की सत्ता कहीं नहीं जाती। वही एक अद्वैत है। यह पूर्ण सत्य है कि जड़ के रूप में चेतन प्रकाशित होता है। अखिल विश्व एक सम्पूर्ण सत्य है। असत्य का भ्रम दूर करना होगा, मानवता की घोषणा करनी होगी।"*[7]

श्रीकृष्ण के द्वारा अर्जुन को दिया गया सत्य का यह उपदेश महात्मा द्वारा सत्याग्रहियों को दिया गया उपदेश ही जान पड़ता है। सत्य की अदम्य अपराजित शक्ति का परिचय इस नाटक में दिखाई देता है।

इसी सत्य की प्रतिष्ठा लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'एक सत्य हरिश्चन्द्र' में देखी जा सकती है। रोहित के संवाद परम्परागत मान्यताओं को उखाड़ने और शोषण सहती हुई जनता को जागृत करने के लिए रचे गए हैं –

'सत्य वही है जो सहज ही जीवन में किया जा सके। जो न किया जा सके वह झूठ है, वह धोखा है।[8]

पौराणिक कथा के आधार पर डॉ लक्ष्मीनारायण लाल ने समसामयिक शासन-व्यवस्था में व्याप्त तानाशाही एवं आतंक की स्थिति को सुन्दर ढ़ंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। गाँधी के अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन भी हमें अनेक नाटकों में दिखाई देता है। उदाहरणस्वरूप प्रसाद के नाटकों को ही लिया जा सकता है। 'अजातशत्रु', 'विशाख' और 'जनमेजय का नागयज्ञ' इन तीनों नाटकों में प्रतिहिंसा का भाव सहानुभूति और करूणा के रूप में परिवर्तित हो जाता है और आत्मसंयम एवं आत्मशासन की प्रतिष्ठा होती है। यही आत्मशासन अहिंसा है। नाटक 'अजातशत्रु' में 'मल्लिका' के आदर्श चरित्र में अहिंसा की चरम सीमा दिखाई गई है। यह जानकर भी कि उसके पति की हत्या का कारण कौन है, उसके मुखमंडल पर ईर्ष्या और प्रतिहिंसा का चिह्न लेशमात्र भी व्यक्त नहीं होता। उपकार का स्मरण उसे कर्त्तव्य से विमुख नहीं करता। वह प्रसेनजित के अपराध को केवल उपेक्षित भाव से देखती है तथा संकट उपस्थित होने पर उसकी सेवा भी करती है। इतना ही नहीं उसे राजधानी तक सकुशल पहुँचाने की व्यवस्था भी करती है। पति के हत्यारे की भी वह सेवा करती है। अहिंसा का इससे श्रेष्ठ उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

गाँधी द्वारा प्रचारित सर्वधर्म समन्वय के सिद्धान्त का प्रतिपादन भी हिन्दी नाटकों में परिलक्षित होता है। प्रेमचन्द के नाटक 'प्रेम की वेदी' में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ है। ईसाई बाला जैनी के द्वारा धर्म के नाम पर बनाए गए दायरों पर व्यंग्य कसा गया है। यथा –

"लोगों ने यह तरह-तरह के मत बनाकर संसार में कितना विष बोया है, कितनी आग लगाई है, कितना द्वेष फैलाया है।"[9]

हिन्दी नाटककारों ने अपने नाटकों में कर्म सिद्धान्त का निरूपण किया है। कर्त्तव्य के प्रति जागरूक होना ही कर्म-पथ पर चलना है। गाँधी ने सत्कर्म का ही आग्रह किया है। शुद्ध-बुद्धि से कर्म करने में ही जीवन की सार्थकता निहित है। 'अजातशत्रु' नाटक में गौतम धर्म क्रान्ति का समाधान प्रस्तुत करते हुए कहते हैं–

"हमें अपना कर्त्तव्य करना चाहिए। दूसरों के मलिन कर्मों को विचारने से भी चित पर मलिन छाया पड़ती है। शुद्ध बुद्धि की प्रेरणा से सत्कर्म करना चाहिए।"[10]

आधुनिक हिन्दी नाटकों पर गाँधीजी की समाजलक्षी विचारधारा का प्रभाव भी अत्यधिक गहरा है। नाटकों में समकालीन समाज के गंभीर प्रश्नों को उठाया गया है। कुरीतियों और कुप्रथाओं की आलोचना की गई है तथा साथ ही सुधार एवं परिवर्तन का आर्दश समाधान भी प्रस्तुत किया। नारी जीवन की समस्याओं, मद्य निषेध और अछूतोद्धार आदि विषयों पर भी नाटक लिखे गए।

सामाजिक समस्याओं पर विचार करने वाले अन्य नाटककारों में घनानन्द, महमूद अली, शिवरामदास, चन्द्रशेखर पाण्डेय, वृन्दावनलाल वर्मा और अश्क के नाम उल्लेखनीय हैं। गाँधी की विचारधारा का प्रत्यक्ष प्रभाव नारी जागरण पर परिलक्षित है जिससे भारत में नारी स्वतन्त्रता की भावना बलवती होने लगी। पुरूष पात्रों की भाँति नारियों को भी निर्भयता, आत्मत्याग, उदारता, दूरदर्शिता, सेवापारयणता और सहिष्णुता आदि गुणों में मंडिता किया जाने लगा। प्रसाद ने 'जनमेजय का यज्ञ' में दिखाया है कि पत्नी पति की दासी नहीं है कि उसकी हर बात को वह आँखें मूंदकर मानती रहे। वह पति से कहती है—

"आपको सब अधिकार हैं पर मेरी सहज स्वतन्त्रता का अपहरण करने का नहीं।"[11]

नारी चरित्रों में कल्याणी, अलका और मालविका में राजनीतिक संघर्षों में पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लेने की प्रवृत्ति प्रकट हुई है। प्रसाद ने नारी को प्रेरणादायिनी के रूप में प्रस्तुत किया है।

नाटक 'स्कन्दगुप्त' की कमला का चरित्र एक वीर माता का है। विष्णु प्रभाकर के 'गांधार की भिक्षुणी' में आनन्दी का पात्र नारी शक्ति का परिचय देता है और इस नारी के पीछे संगठन की भावना जागृत दिखाई देती है।

गाँधी को न तो नारी का दासी रूप सहन है और न स्वेच्छाचारी रूप ही। वे उसे माता, भगिनी सम्मानित पत्नी रूप में देखना ही उचित समझते थे। जिस हिन्दु-मुस्लिम एकता की महत्ता को महात्मा गाँधी ने भली प्रकार से समझ लिया था उसका अंकन भी नाटकों में सफलतापूर्वक किया गया है। प्रसाद के 'प्रायश्चित' और 'कामना' नाटकों में आपसी वैमनस्य की बुराइयों को दूर करने का सन्देश है। उदयशंकर भट्ट ने 'मुक्तिदूत' नाटक द्वारा गाँधीयुगीन विषम परिस्थितियों को प्राचीन आख्यान के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। सेठ गोविन्ददास कृत 'पाकिस्तान' नाटक में हिन्दु-मुस्लिम धार्मिक संघर्ष के कटु परिणामों पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष पर विचार करने वाले नाटककारों में गाँधीवादी विचारधारा के समर्थक हरिकृष्ण, प्रेमी का स्थान सर्वोपरि है। 'रक्षाबन्धन' नाटक में हिन्दु-मुस्लिम एकता का सुन्दर उदाहरण मिलता है।

सामाजिक सुधार और आर्थिक समृद्धि की दृष्टि से मादक-द्रव्यों के निषेध का महात्माजी ने पूरी शक्ति के साथ प्रचार किया था। उनकी इस विचारधारा का प्रभाव भी कतिपय नाटकों में परिलक्षित है। गोविन्दवल्लभ पन्त कृत 'अंगूर की बोटी' में मदिरापान के दुष्परिणामों का चित्र प्रस्तुत किया गया है। नाटक का नायक मोहनदास एक शराबी व्यक्ति है। इस लत से घर में अशान्ति, कलह और निर्धनता फैल जाती है। परन्तु धीरे-धीरे पत्नी के प्रयासों से वह इस व्यसन से छुटकारा पा लेता है। प्रसाद के नाटक 'कामना' में भी विलास और शराब की बुराइयों का उल्लेख मिलता है। जनता मदिरा के पात्र तोड़कर खुला विरोध प्रदर्शित करती दिखाई गई है।

गाँधी की ग्रामोद्धार योजना से भी नाटककार प्रभावित हुए हैं। ग्राम-सुधार को बहुमुखी धाराओं में पंचायत सहकारिता आंदोलन, सफाई ग्राम-संगठन-ग्रामोदयोग, साँस्कृतिक एवं शैक्षणिक सभी समस्याओं पर आधारित नाटक लिखे गए हैं। ग्रामजीवन की आर्थिक विषमता तथा किसानों-मजदूरों की दयनीय विवश अवस्था का चित्रण भी इन नाटकों में मिलता है। बाबूरामसिंह लमगोड़ा ने 'गाँव की ओर' नाटक में सुख की लालसा में अपनी जन्मभूमि को छोड़कर नगरों में जाकर बसने वालों की दुर्दशा का वर्णन किया है। भारत की संस्कृति गाँवों से जुड़ी है। महात्मा गाँधी के अनुसार-भारत-देश गाँवों का देश है और सच्चा भारत ग्राम में ही वास करता है। इसमें लेखक ने 'गाँव की ओर' मुड़ने का सन्देश दिया है।

आर्थिक-विषमता और ग्राम-समस्या पर लिखे गए वृन्दावनलाल वर्मा के नाटक 'खिलौने की खोज' में आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

आर्थिक-समता स्थापित करने तथा ग्रामोन्नति करने के लिए चरखे और खादी की महत्ता का समर्थन भी कुछ नाटकों में दिखाया गया है। विष्णु प्रभाकर के नाटक 'हमारा स्वाधीनता संग्राम' में राष्ट्र के नवयुवक चरखा चलाने, सूत कातने और खादी पहनने की प्रतिज्ञा करते हैं। चर्खे की महत्ता को दिखाने के लिए चन्द्रत्यागी ने 'चरखा' नाटक

लिखा, जिसमें रामदास नामक पात्र चरखे की उपयोगिता प्रदर्शित करता है। ठाकुर लक्ष्मणसिंह कृत 'गुलामी का नशा' का नायक रामानुज खादी के प्रचारक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दी नाटकों में शिक्षा सम्बन्धी गाँधी विचारधारा का प्रकाशन भी हुआ है। लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक 'आधी रात' में अंग्रेजी शिक्षा के प्रति तिरस्कार प्रकट किया गया है। नौवें दशक में उभरकर सामने आने वाले नाटककारों में विभुकुमार का नाम उल्लेखनीय है। उनका नाटक 'हवाओं का विद्रोह' समकालीन शिक्षा व्यवस्था को दायरे में लाकर एक विशेष पक्ष की चिंता को वाणी देने वाला एक नए शिल्प का नमूना है। इसमें आदिवासियों और अविकसित जनजातियों को सरकारी प्रयासों से शिक्षित करने के प्रयासों की विफलता को दर्शाया गया है।

गाँधी विचारधारा के विविध परिप्रेक्ष्यों के संदर्भ में किए गए नाटक-साहित्य के अध्ययन करके निश्चय ही दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है कि गाँधीजी के उदय तथा उनकी विचारधारा के प्रसार ने हमारे नाटक-साहित्य को एक निश्चित दिशा प्रदान की है। कथावस्तु का चयन और निरूपण पात्रों का निर्वाचन तथा चित्रांकन और उद्देश्य का प्रतिपादन इस कथन की सत्यता प्रमाणित करता है। गाँधी विचारधारा से प्रभावित नाटकों व रचनाओं ने हमारा ध्यान प्राचीन-गौरव, चरित्र-दृढ़ता, उत्कर्ष और उत्कृष्टता की ओर आकृष्ट किया है। इन सभी राष्ट्रीय, पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक व समस्या प्रधान नाटकों में समाज सुधार, आर्थिक सामाजिक विकास, पुनर्निर्माण और आदर्शवाद की प्रवृत्तियाँ मुख्य रूप से मुखरित हुई हैं। यह कृतियाँ अपने लक्ष्य में खरी उतरती हैं।

गाँधी विचारधारा से प्रभावित हिन्दी नाटक साहित्य में सचेष्ट सामाजिक चेतना अभिव्यक्त हुई है। इन साहित्यकारों ने जनता की चित्तवृत्तियों से अधिकाधिक साम्य स्थापित किया है। कहा जा सकता है कि गाँधी प्रभाव हिन्दी नाट्य साहित्य में सम्पूर्ण ओज व गरिमा के साथ प्रतिष्ठित है। ऐतिहासिक नाटकों में राष्ट्र के नव-जागरण तथा स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने की प्रेरणा दी गई है। पौराणिक नाटकों में अमानवीय अंशों का परिहार कर उन्हें गाँधी-परिवेश से जोड़ा गया। सामाजिक नाटकों में समाजसुधार के विविध पक्षों का चित्रण करते हुए गाँधीवादी कार्यक्रमों की स्वीकृति दर्शायी गई है। इन नाटकों में गाँधीजी के व्यवहार पक्ष की प्रमुखता है। गाँधी विचारधारा के प्रभाव से शायद ही कोई कवि या साहित्यकार अप्रभावित रहा हो।

हिन्दी साहित्य पर गाँधी का प्रभाव पूरे वेग के साथ पड़ा है। महात्मा गाँधी के प्रभाव के फलस्वरूप महाकवि चन्द के पश्चात, पहली बार साहित्यकार भी युद्धरत हुए। उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में सेनानी व सिपाही की भूमिका भी अदा की तथा साहित्यसृष्टा के दायित्व भी सम्पूर्ण आवेश के साथ निभाया। साहित्यकारों की आवाज़ में जोश आया और उनका दृष्टिकोण बदला। फलतः साहित्यकारों ने स्वशासन व स्वाधीनता की मांग साहित्य में बुलन्द की। स्वयं गाँधीजी द्वारा रामायण, महाभारत, गीता आदि पर नए दृष्टिकोण से टीकाएँ व व्याख्याएँ लिखी गईं। जिनका महत्व अक्षुण्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1) मेरे सपनों का भारत : गाँधीजी विशेषांक, पृ.-7।
2) लहर – जयशंकर प्रसाद, पृ.-28।
3) स्वर्णधूलि, पंत, पृ.—32।

4) कामायनी – जयशंकर प्रसाद, पृ. –140।
5) विशाख – जयशंकर प्रसाद, पृ. – 50,51।
6) विशाख – जयशंकर प्रसाद, पृ.—51।
7) जनमेजय का नागयज्ञ – जयशंकर प्रसाद, पृ. –106।
8) एक सत्य हरिश्चन्द्र – लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. – 37।
9) प्रेम की वेदी – प्रेमचन्द (सातवां दृश्य)
10) अजातशत्रु – जयशंकर प्रसाद, (अंक दूसरा – दृश्य प्रथम)।
11) हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास, डॉ दशरथ ओझा, पृ. – 347।